एम० ए० (हिन्दी I सेमेस्टर

द्वितीय ~~प्रश्नपत्र~~ पत्र (आदिकाल)

डॉ० अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज

प्रश्न० आदिकाल की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए उसके राजनीतिक, सामाजिक, ~~धार्मिक~~ और धार्मिक ~~सांस्कृतिक~~ स्थितियों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर

किसी भी युग की अपनी खास विशेषता होती है। बिना उन विशेषताओं को समझे उन परिस्थितियों का ज्ञान नहीं प्राप्त किया जा सकता है। आदिकाल की परिस्थितियों के जानने से पहले हमें उसकाल की राजनीतिक, सामाजिक पृष्ठभूमि को समझना आवश्यक है। सबसे पहले हम उस समय की राजनीतिक परिवेश को समझने की कोशिश करते हैं। भारतीय साहित्य का यह युग राजनीतिक कलह, पराजय एवं अव्यवस्था का काल है। यह वह समय है जब विदेशी आक्रमणकारी भारत पर अपनी दृढ़ सत्ता स्थापित करना चाहते थे। दूसरी ओर, भारत के राजा, रजवाड़े आपसी कलह में एवं युद्ध में अपनी शक्तियों का अपव्यय कर रहे थे जिस के कारण देश की शक्ति का ह्रास हो रहा था। सम्राट हर्षवर्द्धन (606-613 ई०) के पश्चात उत्तर भारत की केन्द्रीय शक्ति इस प्रकार खोखली हो गयी थी कि सार्वभौम सत्ता की कल्पना ही नष्ट हो गयी। राजा भोज ने एकबार पुनः इन बिखरे हुए सूत्रों को बटोरने का कार्य किया, किंतु दक्षिण के नरेशों ने उनके इस कार्य को विफल कर दिया। उधर इस्लामी शक्तियों ने (710-711 ई०) भारत में प्रवेश की पहले से ही योजना बना रखी थी। सबसे पहले मुहम्मद इब्न कासिम ने सिन्ध के राजा दाहिर पर आक्रमण किया। राजा दाहिर पूरी तरह पराजित हुए। उसके अभद्र व्यवहार के कारण उस समय के जाट राजाओं ने भी आक्रमणकारियों का साथ दिया। इस प्रकार मुसलमान आक्रमणकारियों का भारत में प्रवेश हो गया। सन 739 ई० में तत्कालीन अरब सेनापति ने सिंध से

दक्षिणी मारवाड़, उज्जैन तथा उत्तरी भारत को ध्वस्त कर गुजरात में प्रवेश किया।

उत्तर भारत में 10वीं व 11वीं शताब्दी में प्रतिहारों का राज्य था। इसी समय 10वीं शताब्दी के अंत में महमूद गजनवी गजनी का शासक हुआ। उसने पंजाब मथुरा, कन्नौज और ग्वालियर को लूटा और सौराष्ट्र में सोमनाथ मंदिर पर आक्रमण कर खून की नदी बहा दिया। उस समय के चोल राजा राजेन्द्र अपने साम्राज्य विस्तार में लगा हुआ था। अगर उसी समय महमूद गजनवी को परास्त कर दिया जाता तो भारत गुलाम न होता। इस प्रकार आपसी कलह, राजनीतिक अव्यवस्था के कारण देश पर मुसलमानों का शासन स्थापित हो गया। भारतीय राजाओं की अकर्मण्यता के कारण देश गुलाम हो गया।

धार्मिक परिस्थिति

धार्मिक क्षेत्र में भी भारत की कोई अच्छी स्थिति नहीं थी। वैदिक धर्म अपनी बिखी हुई परंपरा से आगे नहीं बढ़ सका। जिसके कारण धार्मिक क्षेत्र में अरा जकता की स्थिति फैली। धार्मिक कर्मकांड, रूढ़ियाँ एवं पाखंड के कारण भारतीय जनता का दम घुट रहा था। जिसके कारण बौद्ध, जैन एवं शैव मत के अनुयायी इस धर्म से पीछे हटने लगे। किंतु बाद में चलकर इन धर्मों में भी बाह्य आडम्बर और धार्मिक विकृतियाँ घुस आई। जिसके कारण मदिरापान एवं उपासना के नाम पर शैतान चार एवं हठयोग ने पूरे वातावरण को विकृत कर दिया। धर्म के प्रचार के नाम पर उत्पीड़न, मूर्तिपूजा एवं मोक्ष के लिए वृक्ष एवं साँपों की पूजा प्रधान हो गए। बौद्ध धर्म भी शंकराचार्य के अद्वैतवाद के लोकप्रिय होने के कारण अपने सद् उपदेशों को भुलाकर सिद्धि लाभ के लिए गुप्त मंत्र, होम-जाप आदि क्रियाओं में निमग्न हो गए। इसमें कामुकता को बढ़ावा मिला तथा निरीह जनता अपने को ठगा महसूस करने लगी। इस प्रकार पूरा

P.T.O.

पूरा समाज विकार ग्रस्त हो गया। वैष्णवों, शैवों, पाशुपतों एवं कापालिक इत्यादि संप्रदायों ने बौद्ध धर्म का ही अनुसरण करना शुरु कर दिया जिससे समाज में अराजकता फैल गयी। शंकराचार्य, रामानुजाचार्य एवं निम्बिकाचार्य जैसे महापुरुषों ने उपदेश देने के सिवा कुछ न कर सके। धार्मिक क्षेत्र की यही स्थिति आगे चलकर देश और समाज के लिए अशुभ हुआ।

सामाजिक परिस्थिति

धर्म की प्रधानता होने के कारण इस युग में सामाजिक स्थिति और भी बुरी थी। अब जाति-व्यवस्था गुण और कर्म के आधार पर न होकर वर्ण के आधार पर तय होने लगे। एक जाति अनेक जातियों में विभक्त हो गए। जाति के नाम पर लोग प्रताड़ित किए जाने लगे। छुआछूत के नियम कड़े कर दिये गए। उच्च-जातियों के लिए अलग नियम बने, निम्न जातियों के लिए अलग। श्रेष्ठता बोध की भावना जागने लगी। अंधविश्वास एवं रुढ़ियों ने प्रश्रय पाया। राजपूत हिन्दू-जाति वीरता के प्रतीक थे। ब्राह्मण समाज श्रेष्ठ कहलाने लगे उनकी पूजा होने लगी। वैश्यों को व्यापार से ही फुर्सत न थी जिसमें धूर्त बनिये दोनों हाथ से निरीह जनता को लूटे लूटते थे। सबसे बुरी स्थिति निम्न जाति की थी जिनका कार्य अपने महाप्रभुओं की सेवा करना था और समय-समय पर मार एवं प्रताड़ना भी झेलना पड़ता था। इधर राजपूत वीरता के नाम पर धन-संपत्ति अर्जित करते थे और सारी सुख-सुविधाओं का उपभोग करते हुए विलासिता का जीवन बिताते थे। यही कारण था कि पूरे समाज की स्थिति दुर्बल और ह्रासोन्मुखी थी। राजाओं का अधिकांश समय रंगरेलियाँ मनाते हुए बीतता था। बहु-विवाह का प्रचलन था। राजा लोग एक से अधिक पत्नियाँ रखते थे। सुरा- और सुंदरी का दौर जारी था और जनता त्राहिमाम करती थी। समाज में स्त्री के प्रति पुरुषों की धारणा अच्छी न थी। किसान और मजदूर बेहाल थे। पूरा समाज अव्यवस्था के दौर से गुजर रहा था। यह था उस समय की सामाजिक स्थिति। □□